International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 51-53

भारत के बौद्ध तीर्थ स्थलों में सारनाथ का महत्त्व

कामेश्वर प्रसाद

नव नालन्दा महाविहार, नालंदा, मानित विश्वविद्यालय, बिहार, भारत।

सारांश

सारनाथ में भगवान् बुद्ध ने प्रथम उपदेश देकर जो धर्मचक्र प्रवर्तन किया था। वह कल्याणकारी एवं मंगलकारी धम्म का प्रारंभ किया था। जो मानव के लिए सबसे पहला सामाजिक क्रांति था। सारनाथ का प्राचीन नाम मृगदाव था। जहाँ के हरे–भरे जंगलों में मृगों का झुण्ड रहा करता था। धर्मचक्रप्रवर्तन के पश्चात बुद्ध ने भिक्षुसंघ की नींव रखी थी तथा अपने 60 भिक्षुओं के साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष में समता एवं समानता की अलख जगा दी। सम्राट अशोक ने बुद्ध से संबंधित घटना स्थलों को चीर स्थायी प्रदान करने के लिए भव्य स्मारकों का निर्माण करवाया तथा बौद्ध धर्म को अपना राजाश्रय एवं संरक्षण प्रदान किया। श्वेन–त्सांग अपने विवरण में लिखा है कि मूलगंधकुटी बिहार के शीर्ष मार्ग पर सोने का आमतल सुशोभित था। बिहार की सीढ़ियां पत्थर की बनी हुई थी।

1794 ई.वी. में बनारस के जमींदार बाबू जगत्सिंह के आदमियों द्वारा जगत्सिंह मोहल्ला बसाने हेतु सारनाथ के प्राचीन अवशेषों को तहस–नहस करना एवं ईटें उखाड़ कर ले जाना बौद्ध धर्मावलम्बियों एवं देशवासियों पर कुठाराघात किया। सर्वप्रथम सारनाथ का कनिंघम ने दिसम्बर 1834 से लेकर जनवरी 1936 ई.वी. तक सरवेक्षण करके रिपोर्ट प्रस्तुत किया। सारनाथ में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित 3 स्तूपों के अवशेष अभी मिलें है। जैसे – 1. धमेख स्तूप, 2. धर्मराजिका स्तूप, 3. चौखडी स्तूप। ऐसे कई अन्य स्तूप होंगे। आवश्यकता है और खुदाई की।

मुख्य शब्द : भगवान् बुद्ध, बौद्ध धर्म, बौद्ध तीर्थ स्थलों

प्रस्तावना

भारतवर्ष स्थित बौद्ध तीर्थ स्थलों में सारनाथ को वही स्थान प्राप्त है जो मुसलमानों के लिए मक्का–मदीना और सिक्ख धर्मावलम्बियों के लिए स्वर्ण मन्दिर का। भारत के बौद्ध तीर्थ स्थलों में सारनाथ का विशेष महत्व है। सारनाथ वाराणसी के करीब 7 कि. मी.दूर उत्तर दिशा मे स्थित है। यहीं बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश देकर अपने धर्म का प्रवर्तन किया था तथा अपने कल्याणकारी एवं मंगलकारी धम्म का प्रारम्भ किया। सारनाथ का प्राचीन नाम मृगदाव था जहाँ के हरे–भरे जंगल के मृगों का झुण्ड रहा करता था। ''जातक कथा'' के एक उद्धरण से स्पष्ट होता है कि काशी के राजा ब्रह्मदत्त इस मृगदाव में रोज शिकार के लिए आया करते थे। उस समय बुद्ध बोधिसत्व के रूप में इस वन में रहते थे, उन्होंने काशीराज को अहिंसा की शिक्षा दी। सारनाथ का उल्लेख ललितविस्तर में इसिपत्तन मृगदाय नाम से आया है, यह नाम संयुक्तनिकाय में भी मिलता है। विभिन्न देशों के बौद्ध धर्मावलम्बी इसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं यथा – सिंहली–इतिपत्तनारामय, बर्मी–मिगदालु, चीनी–लुयेबा, तिब्बती–वाराणसी इत्यादि।

बोधगया में बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात् बुद्ध ने चंक्रमण करते हुए अपने ज्ञान का प्रवर्तन करने पर विचार करते रहे। इस संदर्भ में जिन पांच साधु ने उरूवेला में सुजाता के खीर ग्रहण करने पर उन्हें भ्रष्ट मानकर उनका साथ छोड़कर सारनाथ चले आये थे उन्हीं पांच साधुओं को बुद्ध ने सर्वप्रथम अपना उपदेश देने का निश्चय किया। इसके लिए वे बोधगया से सारनाथ की ओर प्रस्थान कर उन पांच साधु गणों को खोज एवं उन्हें अपने ज्ञान की दिव्य शक्ति से अवगत कराया। बौद्ध जगत् में यह एक महान घटना थी, इसे बौद्ध साहित्य में ''धर्मचक्रप्रवर्तन'' कहा गया है। यह घटना बौद्ध धर्म की महान संस्कृति को संवारने में सहायक सिद्ध हुआ। यही धर्मचक्रप्रवर्तन के पश्चात् बुद्ध ने भिक्षु संघ की नींव रखी तथा अपने 60 भिक्षुओं के साथ पूरे भारतवर्ष में बौद्ध धर्म का प्रचार किया। मृगदाव वन होने के कारण सारनाथ का एक नाम ''सारंगनाथ (मृगों के स्वामी)'' भी मिलता है तथा सारंगनाथ (भगवान शिव) का सारनाथ में एक मंदिर भी है। सम्भवतः सारंगनाथ के नाम पर वर्तमान समय में इस स्थल का नाम सारनाथ पड़ा जो आज तक प्रचलित है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सारनाथ का नाम अपने विवरण में ''सिन–जेन–यू–यूआन'' दिया।

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के करीब 300 वर्ष पश्चात् सम्राट अशोक ने बुद्ध से संबंधित घटना स्थलों को चिर–स्थायी रूप प्रदान करने की दृष्टि से उन पर भव्य स्मारकों का निर्माण करवाया तथा बौद्ध धर्म को अपना राजाश्रय एवं संरक्षण प्रदान किया। इस संदर्भ में सम्राट अशोक ने सारनाथ में भी स्तूपों एवं सिंह स्तम्भ को स्थापित करवाया। सारनाथ में जहाँ बुद्ध ने पंचवर्गीय भिक्षुओं से आदर सत्कार प्राप्त किया था उस स्थल पर चौखण्डी स्तूप तथा जहाँ बुद्ध ने ''धम्मचक्कपवत्तसुत्त'' का उपदेश दिया वहाँ पर धर्मराजिका स्तूप का निर्माण करवाया। सारनाथ आगे भी कनिष्क काल, गुप्तकाल, हर्षकाल तथा पाल राजाओं के काल में भी क्रमिक करता रहा। सारनाथ में आये चीनी यात्री फाह्यान तथा ह्वेनसांग ने यहाँ स्तूप एवं सिंह स्तम्भ देखा था तथा उसने उस समय मूलगन्धकूटी विहार को 200 फुट ऊँचा बताया था। ह्वेनसांग लिखता है ''मूलगन्धकुटी विहार के शीर्ष मार्ग पर सोने का एक आमतल सुशोभित था। विहार की नीव तथा सीढ़ियाँ पत्थर की बनी थी, किन्तु मण्डप और ताखे ईंटों के बने थे। मन्दिर के चारों ओर बने 100 ताखें में सोने की आदमकद बुद्ध मूर्ति स्थापित थी तथा मध्य में धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा के मूर्ति स्थापित थी। मन्दिर के चारों ओर 40 फुट चौड़ा प्लास्टर युक्त चबुतरा बना हुआ था, जिसके ऊपर 60 फुट वर्गाकार में पूर्वाविमुख मन्दिर बना था। ह्वेनसांग ने एक और स्तूप का वर्णन देते हुए लिखा है ''राजधानी के पूर्वोतर में वरूणा नदी के पश्चिमी किनारे पर एक स्तूप है जो 100 फीट ऊँचा है, इसके सामने एक स्तम्भ है, यह आइने की तरह चमकता है, इसका बाहरी भाग चिकना और

बर्फ की तरह चमकदार है और इस पर बुद्ध की मूर्ति छाया में सर्वदा दिखायी देता है। सारनाथ बुद्ध के बाद भी निरन्तर विकास करता रहा तथा यह बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में फलता–फूलता रहा जिसके कारण यहाँ अनेक शासकों ने निर्माण कार्य कराया जिसके अवशेष आज भी सारनाथ में मौजुद अपने भव्यता की गाथा चिर काल से करते आ रहे है। आज वर्तमान समय में सारनाथ एक पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में विश्व भर में आकर्षण का केन्द्र बना है।

सारनाथ का कला सर्वेक्षण

1794 ई0 में बनारस के जमींदार बाबू जगत सिंह के आदमियों द्वारा जगत सिंह मुहल्ला बसाने हेतु ईटें सारनाथ के प्राचीन अवशेषों से उखाड़कर ले लायी। इस प्रकार इस ऐतिहासिक स्थल का उत्खनन अत्यंत अवैज्ञानिक ढंग से मात्र ईंटों एवं पत्थरों को प्राप्त करने के लिए किया गया था। यद्यपि इससे इस ऐतहासिक स्थल को काफी क्षति पहुँची थी। परन्तु इसका एक लाभ यह हुआ कि पुरातत्वविदों एवं इतिहासकारों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। मि0 डंकन के अनुसार ईंटें निकाले जाने वाले स्तूप के 18 हाथ की गहराई पर एक प्रस्तर पात्र के भीतर हरे संगमरमर की मंजुषा में कुछ हड्डियाँ एवं सुवर्णपत्र, मोती के दाने और रत्न मिले थे। मि0 डंकन के लेख के प्रकाशित होते ही सारनाथ इतिहासकारों एवं पुरातत्वविदों के लिए आकर्षण बन गया। फलतः कर्नल मैकेन्जी ने इसका सर्वेक्षण कर सर्वप्रथम उत्खनन करवाया। यद्यपि उनके सर्वेक्षण की कोई रिपोर्ट प्रकाशित नहीं हुयी पर उत्खनन में प्राप्त समस्त मूर्त्तियाँ कोलकाता संग्रहालय में सुरक्षित है। लोगों का ध्यान सारनाथ कीओर आकर्षित हुआ धमेख स्तूप देखने के लिए धीरे–धीरे लोग जाने लगे। आने वालो में विशेष रूप से ऐसे लोग होते थे जो ऐतिहासिक स्थलों में रूचि रखते थे। ऐसे लोगों में एक मिस एमा राबर्ट थीं जो धमेख स्तूप से काफी प्रभावित हुई और उन्होंने पाश्चात्य विद्वानों का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया। इनमें सर्वप्रथम कनिंघम ने दिसम्बर 1834 से जनवरी 1936 ई0 तक सारनाथ का विस्तृत सर्वेक्षण करके एक रिपोर्ट प्रस्तुत किया। रिपोर्ट में कनिंघम ने अपनी व्यक्तिगत धारणा के बारे में बतलाया। प्रथमतः कनिंघम ने चौखण्डी स्तूप का निरीक्षण किया। तत्पश्चात धमेल स्तूप को खोद कर उनके अंदर से ''ये धम्मा हेतु प्रभवा'' इत्यादि बौद्ध मंत्र से अभिलिखित गुप्तकालीन एक शिलापट्ट प्राप्त किया। धर्मराजिका स्तूप के उत्तर में खुदायी करने पर उन्हें एक बौद्ध मठ मिला। कनिंघम के बाद 1851–52 में मेजर मारखम किट्टो ने धमेख स्तूप के आस–पास कई स्थानों की सफायी करवायी जहाँ उन्हें अनेक छोटे–छोटे स्तूप मिले जिनका विवरण कनिंघम को लिखे पत्रों से ज्ञात होता है। विहार संख्या छः को खोद निकाला, जिसे उस समय ढेर के ढेर सिल–लोढ़ों के कारण अस्पताल समझा गया था जबकि वस्तुतः वह एक चौकोर बौद्ध मठ था। मेजर किट्टो सरकारी इंजिनियर थे तथा सारनाथ की खुदायी थोड़ा ही कर पाये थे कि खराब स्वास्थ्य के कारण त्यागपत्र देकर वापस इंगलैण्ड चले गये। मेजर किट्टो ने अपना कोई लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं किया। 1853 ई0 में किट्टो के लौट जाने के बाद यह खोज कार्य क्रमशः ई0 थामस जो जज थे एवं प्राचीन सिक्का रखने के शौकीन थे तथा प्रो0 किट्स एडवर्ड हॉल जो बंगाल एशियाटिक सोसाइटी से सम्बद्ध थे, ने जारी रखा। सम्भवतः इसके बाद डी0 एटलर ने खुदाई कार्य किया मगर इसका कोई विवरण नहीं है। सी0 धर्म ने सारनाथ में उत्खन करवाया उन्हें जो वस्तुएँ प्राप्त हुयी वे कोलकाता संग्रहालय में संग्रहित है। इसके बाद क्रमशः एफ0 ओ0 ओरटल, बी0 बी0 चक्रवर्ती, सर जॉन मार्शल आदि ने साथ मिलकर वैज्ञानिक ढंग से उत्खनन कार्य किया तथा बहुत सी महत्वपूर्ण कलाकृतियों को मलबे से बाहर निकाला। 1914–15 ई0 में एस0 हरग्रीव्स ने मुख्य मन्दिर के पूर्व और पश्चिम दिशा में उत्खनन करवाया एवं अनेक अवशेष प्राप्त किये। खुदायी के इतने क्रम के फलस्वरूप सारनाथ से बड़ी संख्या में पुरातात्विक सामग्रियाँ प्राप्त हुयीं और इन्हें सुरक्षित रखने में कठिनाई महसूस हुयी। मार्शल के प्रयास से संग्रहालय का निर्माण हुआ तथा आज सारनाथ का यह मुख्य आकर्षण बन गया है। सारनाथ से प्राप्त महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ संग्रहालय में सुरक्षित एवं दर्शकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बन गयी है। संग्रहालय में मौर्यकाल से लेकर गह्डवाल वंश तक की पुरातात्विक सामग्री प्रदर्शित है जो सारनाथ के विकास की गाथा स्वतः बताते हैं। सारनाथ से प्राप्त उत्खनन सामग्री का विवरण इस प्रकार है –

स्तूप

सारनाथ की प्राचीनता को ध्यान में रखकर अशोक ने अन्य तीर्थ स्थलों की भांति सारनाथ में भी स्तूपों का निर्माण कराया। वर्तमान समय में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित तीन स्तूपों के अवशेष यहाँ मिलते हैं जिसका विवरण इस प्रकार हैं–

1) धमेख स्तूप

बौद्ध जगत में धमेख स्तूप खूब प्रसिद्ध है। सर्वप्रथम कनिंघम द्वारा सारनाथ में उत्खनन कार्य किया गया था। घने जंगलों के बीच यह स्तूप बिना किसी सहारे के आकाश को छूता हुआ स्थित है। धमेख शब्द धर्म का असांस्कृति रूप है। यह शब्द धम्मचक्क से धम्मांक हो गया। इसी प्रकार बाद में धम्मांक से धम्मेख बन गया। 12 वीं शताब्दी के एक शिलालेख में ''धम्मांक जयतु'' अर्थात् धम्मांक की जय लिखा मिला है। इससे प्रतीत होता है कि 12वीं शताब्दी में इस स्तूप को धम्मांक कहा गया है। धमेख स्तूप ठोस गोलाकार बुर्ज की भांति है जिसका व्यास 28.35 मी0 तथा ऊँचाई 39 मीटर है। स्तूप वर्तमान समय में सम्पूर्ण अवस्था में स्थित है। स्तूप के निचले भाग में चारों ओर समान दूरी पर आठ बड़ें–बड़ें आले हैं जिसमें पहले बुद्ध मूर्तियाँ रखी हुयी थीं क्योंकि अब भी उनके आसन दिखायी देते हैं। खुदायी में ऐसी मूर्तियाँ मिली हैं जो आसन रहित है। राय बहादुर दयाराम साहनी के मतानुसार इन आठों आलों में या तो विपश्यी, शिखी, विश्म, ककुछन्द, कोनागमन, कश्यप, गौतम एवं मैत्रेय बुद्ध की मूर्तियाँ रखी होंगी या फिर बुद्ध के जीवन से संबंधित आठ प्रमुख मूतियाँ विभिन्न मुद्राओं में रही होंगी। स्तूप का निचला भाग सुन्दर खुदे प्रस्तरों से आच्छादित है तथा ऊपरी भाग ईंट का बना है। यह स्तूप उस स्थान पर बना है जहाँ बुद्ध ने प्रथम धर्मचक्रप्रवर्तन किया था यद्यपि स स्तूप से धातु अवशेष अब तक प्राप्त नही हुए हैं किन्तु छठी और सांतवी शताब्दी की लिपि में अंकित एक लेख शीर्ष भाग के तीन फुट नीचे प्राप्त हुआ था जिसमें यह गाथा उल्लिखित है –
जिसमें यह गाथा उल्लिखित है –

''ये धम्मा हेतुप्पभवा, हेतुतेसं तथागतो आह।
ते संचयो निरोधो, एवं वादी महासमनो।।

अभिलेख से यह भी स्पष्ट है कि चौथी से सातवी सदी तक सारनाथ सर्वास्थिवादी भिक्षुओं की प्रमुखता थी।

2) धर्मराजिका स्तूप

इस स्तूप का निर्माण सम्राट अशोक द्वारा करवाया गया था। वर्तमान समय में स्तूप की केवल नींव ही बची है। काशीराज के मंत्री जगत सिंह ने 1794 ई0 में जगतगंज मुहल्ला बसाने के लिए इस स्तूप को उधेड़ डाला। इस स्तूप के भीतर बुद्ध के अस्थि–अवशेष विद्यमान थे जिसे गंगा में फिकवा दिया गया। कुशाण काल में इस स्तूप की

मरम्मत करायी गयी थी तथा इसके चारों ओर 16 फुट प्रदक्षिणा पथ का निर्माण कराया गया था। बंगाल के पाल शासक महीपाल के समय भी इसका जीर्णोद्वार कराया गया था। महीपाल के समय का 1026 ई0 के लेख से अंकित मूर्ति की चौकी जगत सिंह के घर से मिली थी जो कि सम्भवतः इस स्तूप की खुदायी से निकाली थी। इसमें लिखा है कि गौड देश के ''स्थिरपाल और वसन्तपाल'' नाम के दो बन्धुओं ने धर्मराजिका और धर्मचक्र का जीर्णोद्वार कराया था। इस लेख में वर्णित धर्मराजिका नाम का यही स्तूप है। सारनाथ की दो प्रसिद्ध मूर्तियाँ बोधिसत्व की जो कनिष्क काल की है तथा दूसरी विश्व प्रसिद्ध धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा की गुप्तकालीन मूर्ति।

3) चौखण्डी स्तूप

सारनाथ से दक्षिण–पश्चिम दिशा में यह स्तूप बहुत ऊँचा ईंटों का एक ढुहा पात्र है। ह्वेनसांग ने अपने विवरण में दिया है कि सारनाथ से थोड़ी दूर दक्षिण पश्चिम में एक स्तूप है। यह किसी समय बड़ा स्तूप था किन्तु अब अठकोने धर के साथ 84 फुट ऊँचा है। इस (स्तूप) को ह्वेनसांग ने देखा था कालान्तर में यह ध्वस्त हो गया और किसी समय ''शेरशाह सूरी'' से प्राण रक्षा के लिए ''मुगल शासक हुमायूँ'' ने यहाँ शरण ली थी, जिसकी स्मृति में हुमायूँ के पुत्र अकबर ने टोडरमल के पुत्र गोवर्धन को आज्ञा देकर 1583 ई0 में इस स्तूप के ऊँचे टीले पर एक अष्टकोणीय भवन बनवाया जिसके द्वार पर फारसी भाषा में एक लेख अंकित है, जिससे उपरोक्त कथन की पुष्टि होती है। यह स्तूप मूलतः गुप्तकालीन है क्योंकि उत्खनन में गुप्तकालीन ईंटें प्रकाश में आयी है। स्तूप के मूल भाग की ऊँचाई 52′ ग 8'' है, इस पर बने ईंट के अष्ट भुजाकार जो 29′ ग 2'' है। चौखण्डी स्तूप की खुदायी 1835 ई0 में कनिंघम द्वारा की गयी, जिसमें उन्हें कलात्मक सामग्री प्राप्त हुयी थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जातक खण्ड – 2, 4.1.4।
2. संयुक्त निकाय, खण्ड – 4.1.4।
3. मोतीचन्द, काशी का इतिहास, पृ0 94।
4. मोतीचन्द, काशी का इतिहास, पृ0 94।
5. वही, ऊपर, पृ0 95।
6. शांति स्वरूप बौद्ध, सारनाथ, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 पृ0 68।
7. शांति स्वरूप बौद्ध, सारनाथ, पृ0 68।
8. बील, लाइफ ऑफ ह्वेनसांग, पृ0 160।
9. एशियाटिक रिसर्चेज, भाग – 5, 1798 ई0, पृ0 132, धर्मदूत, (कनिंघम रिपोर्ट) 1862, 63, 64, भाग–1, सारनाथ 2007 पृ0 10।
10. वासुदेव शरण अग्रवाल, सारनाथ, पृ0 3।
11. ए0 एस0 आर0, भाग–1, पृ0 111, एमारार्बट, आर0 इलियट ट्यूज इन इण्डिया, भाग–2, पृ0 7।
12. कनिंघम, ए0 एस0 आई0 ए0 आर0, सारनाथ, 1971, पृ0 125
13. ए0 एस0 आर0, भाग–1, पृ0 125।
14. धर्मदूत, 2007, पृ0 23।
15. वाराणसी पर्यटन–विविध आयाम डॉ0 दीनबन्धु पाण्डेय, कला प्रकाशन बी0 एच0 यू0, प्रथम संस्करण, 1999, पृ0 58।
16. वाराणसी पर्यटन–विविध आयाम डॉ0 दीनबन्धु पाण्डेय, कला प्रकाशन, बी0 एच0 यू0, प्रथम संस्करण, 1999, पृ0 59।
17. शांति स्वरूप बौद्ध, सारनाथ, पृ0 73 वासुदेव शरण उपाध्याय, प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर, पृ0 83।
18. शांति स्वरूप बौद्ध, सारनाथ, पृ0 74, दयाराम साहनी, सारनाथ कैटलाग, पृ0 59।
19. वही, ऊपर, पृ0 74, वही, ऊपर, पृ0 59।
20. शांति स्वरूप बौद्ध, सारनाथ, पृ0 76।
21. एच0 सरकार, स्टडीज इन अर्ली बुद्धिस्ट आर्किटेक्चर ऑफ इण्डिया, पृ0 58।
22. दयाराम साहनी, सारनाथ कैटलाग, पृ0 88, एम0 एम0 नागर, सारनाथ का संक्षिप्त परिचय, दिल्ली 1941, पृ0 52।
23. दयाराम साहनी, सारनाथ कैटलाग, पृ0 64।
24. ठाकुर प्रसाद शर्मा, ह्वेनसांग की भारत यात्रा पृ0 333।
25. भिक्षु धर्मरक्षित, सारनाथ का इतिहास, पृ0 165।
26. शांति स्वरूप बौद्ध, सारनाथ, पृ0 78।
27. आ0 स0 रि0, भाग–1, पृ0 118।